ध्यानपरायण रहनेकी बात कही गयी है। जो साधक हैं और संत कहलाते हैं, उनको तो विशेष सावधान रहना है। इन्द्रियाँ और मन बड़े प्रबल हैं। मन धोखा देकर लोक-कल्याणकी भावनासे भी अशुभ कर्ममें प्रवृत्त करा देता है। जहाँतक मेरा अपना अनुभव है—मेरे सामने उदाहरण हैं और मैंने यही समझा है कि साधु-संतोंको, भक्तोंको उनके सरलमति भक्त और चेले ही बिगाड़ते हैं। इन लोगोंके द्वारा प्राप्त अत्यन्त आदर, सब प्रकारकी सेवा, बढ़िया आरामकी चीजें, विविध स्वादिष्ट पदार्थ, उनके मतका आग्रहपूर्ण प्रचार, उनके गुणोंका और चमत्कारोंका प्रचार आदिसे परिणाममें उन संतोंमें यह अभिमान पैदा हो जाता है कि हम ऐसे हैं। फिर वे अपनेको उसी प्रकारका सिद्ध करने, चमत्कारादि दिखलाने तथा परम ज्ञानस्वरूपताका परिचय देने लगते हैं। इन बाह्य चेष्टाओंके अनुरूप वास्तविक स्थिति न होनेसे बर्ताव-व्यवहारमें सावधानी बरतनेपर भी दोष प्रकट हो जाते हैं। इससे लोगोंमें श्रद्धा घटने लगती है, तब उन्हें और भी प्रपञ्च रचने पड़ते हैं। जीवन साधन क्षेत्रसे हटकर प्रपञ्चके क्षेत्रमें आ जाता है। फिर जो उनको वैसा संत नहीं मानते या विरोध करते हैं, उनके प्रति अन्तर्मानसमें द्वेष पैदा हो जाता है और अनुकूल माननेवालेके प्रति राग हो जाता है। जहाँ राग-द्वेष प्रत्यक्ष रूपसे आये कि फिर तीव्रताके साथ परमार्थ-पथसे च्युति होने लगती है और भगवत्पूजाके स्थानपर भगवत्पूजाके नामसे ही जानमें या

Scanned by CamScanner

अनजानमें अहंकारवश व्यक्ति-पूजन होने लगता है और वे संत कहलानेवाले सच्चे साधक भी पतित हो जाते हैं। इसलिये संतको बहुत अधिक सावधान रहना चाहिये।

आप साधु हैं और मैं गृहस्थ; अतएव साधुको किसी प्रकारका उपदेश देनेकी न तो मुझमें शक्ति है, न योग्यता और न मेरा अधिकार ही है। आप प्रेमसे पूछते हैं, अतएव मेरी यह नम्र सम्मति है कि जहाँतक बने, आप लोकालयसे अलग रहें। शिष्य-भक्तोंसे विशेष सावधान रहें। अर्थ और स्त्री—इन दोनोंके साथ—परोपकार और सेवाकी बुद्धिसे भी—सम्पर्क न आने दें; इनसे सर्वथा अपनेको अलग रखें। आपसी पंचायतका काम न करें। चमत्कार न दिखलायें। भविष्य-वाणी न करें। किसीके भी उद्धारका जिम्मा भगवान्‌पर ही रहने दें, स्वयं न लें। अधिक समयतक मौन रहें और अपने पास आनेवाले भक्तोंके साथ केवल भगवच्चर्चा या अध्यात्म-चर्चा ही करें।

आपने भक्तोंको उपदेश देनेके विषयमें पूछा, सो संक्षेपमें तीन ही उपदेश दें--

(१) पाप-कर्मका सर्वथा परित्याग,

(२) विश्वासपूर्वक भगवान्‌का नाम-जप, और

(३) भगवान्‌के अनुकूल दैवी सम्पत्तिके कर्मोंका आचरण।

केवल ऊँची बातों और अद्वैत-ज्ञान तथा विशुद्ध प्रेमके तत्त्व-निरूपणसे कोई लाभ नहीं। घर पहुँचनेपर अपने-आप ही घर पहुँचा हुआ व्यक्ति घरको देख लेता है। असलमें तो